हरिवंश पुराण कथा चित्रों का निरूपण: मेवाड़ का कलात्मक और दार्शनिक आयाम

रंजना जांगिड़*

सारांश

मेवाड़ शैली, भारतीय लघुचित्रकला की एक प्रमुख राजस्थानी शैली है, जो अपने धार्मिक विषयों, जीवंत रंगों और स्पष्ट रेखांकन के लिए जानी जाती है। यह शैली केवल कलात्मक अभिव्यक्ति ही नहीं, बल्कि भक्ति, संस्कृति और तत्कालीन सामाजिक मूल्यों का भी दर्पण है। विषय वस्तु में प्रमुखता से हरिवंश पुराण, श्रीमद्भागवत, रामायण और महाभारत जैसी पौराणिक कथाओं पर आधारित होती है, जिसमें भक्ति संतों की लीलाओं और रागमाला चित्रण भी शामिल है। रेखांकन में मोटी, स्पष्ट और मजबूत रेखाओं का प्रयोग किया जाता है, जो आकृतियों को ठोस रूप देती हैं। इनमें लयात्मकता और प्रवाह स्पष्ट दिखाई देता है। प्राकृतिक और चटकीले रंगों जैसे लाल, पीला, हरा, नीला और सफेद का बहुतायत से उपयोग होता है। रंगों का भराव सपाट होता है, जिसमें कोई छायांकन नहीं होता, लेकिन रंग अपनी प्रतीकात्मकता और सौंदर्यबोध के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।

मानव आकृतियों में बड़ी, उभरी हुई आँखें और अक्सर आड़े कोण में चेहरा चित्रित होता है। पशु और वनस्पति भी शैलीबद्ध और प्रतीकात्मक रूप में दर्शाए जाते हैं। चित्र में सक्रिय और निष्क्रिय अंतराल का कुशलता से उपयोग किया जाता है। दृश्यों को अक्सर दो भागों में बाँटा जाता है, जो कथात्मकता के प्रवाह और दृश्य के अलगाव में सहायक होता है।

मुख्य शब्द - लघुचित्र कला, राजस्थानी शैली, धार्मिक विषय, हरिवंश पुराण, श्रीमद्भागवत, रागमाला, नायक-नायिका भेद, सपाट रंग, आड़े कोण, सक्रिय अंतराल, , भावाभिव्यक्ति।

आलेख

भारतीय लघुचित्र शैली में पौराणिक और धार्मिक ग्रंथों का चित्रण एक सुदीर्घ परंपरा रही है। हरिवंश पुराण, जो महाभारत का एक खिल पर्व (अनुपूरक) है, भगवान कृष्ण के वंश, बाल लीलाओं और चमत्कारों का विस्तृत वर्णन करता है। यह वैष्णव धर्म के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है। हरिवंश पुराण पर आधारित चित्रकलाएँ, विशेष रूप से मेवाड़ शैली में, न केवल कलात्मक सौंदर्य का प्रदर्शन करती हैं बल्कि गहन दार्शनिक और सांस्कृतिक अर्थों को भी समाहित करती हैं। इन चित्रों का निरूपण केवल कहानी सुनाना नहीं है, बल्कि भक्ति, आध्यात्मिकता और दैवीय लीलाओं को दृश्य रूप में प्रस्तुत करना है।

हरिवंश पुराण की कथावस्तु और उसका चित्रण

हरिवंश पुराण मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित है:

हरिवंश पर्व: इसमें सृष्टि की उत्पत्ति, राजा यदु के वंश और कृष्ण के जन्म से पहले की घटनाओं का वर्णन है। चित्रों में अक्सर देवों और असुरों के बीच संघर्ष, पृथ्वी का अवतरण, और विष्णु के अवतारों की आवश्यकता जैसे दृश्यों को दर्शाया जाता है।

विष्णु पर्व: यह सबसे महत्वपूर्ण खंड है, जो भगवान कृष्ण के जन्म से लेकर उनकी युवावस्था तक की लीलाओं, जैसे पूतना वध, गोवर्धन धारण, कालिया दमन, रास लीला और कंस वध का विस्तृत वर्णन करता है।

इन लीलाओं को चित्रों में जीवंत रूप से दर्शाया गया है, जिसमें कृष्ण के चमत्कारी कृत्य और मानवीय भावनाओं का मिश्रण दिखाई देता है।

भविष्य पर्व: इसमें कलयुग के राजाओं, ब्राह्मणों के कर्तव्यों, और युग धर्म का उल्लेख है। हालाँकि, यह भाग चित्रकला में कम ही निरूपित किया जाता है, क्योंकि इसमें दृश्यता और नाटकीयता की गुंजाइश कम होती है।

चित्रों में निरूपण की विशेषताएँ:

हरिवंश पुराण के चित्रों में कथात्मकता पर विशेष जोर दिया जाता है। कलाकार एक ही चित्रपट पर कई घटनाओं को क्रमिक रूप से दर्शाते हैं, जिससे दर्शक पूरी कथा को एक साथ समझ सकें। उदाहरण के लिए, एक चित्र में कृष्ण को माखन चुराते हुए, अगले पल में यशोदा द्वारा डांटा जा रहा और फिर कालिया दमन करते हुए दिखाया जा सकता है। यह "निरंतर कथात्मकता" मेवाड़ चित्रकला की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

कलात्मक और सौंदर्यपरक आयाम

हरिवंश पुराण के चित्रों का निरूपण केवल कथावाचन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें गहरा कलात्मक सौंदर्य भी निहित है:

भावाभिव्यक्ति: कृष्ण की बाल लीलाओं में वात्सल्य रस, राधा और गोपियों के साथ रास लीला में श्रृंगार रस, और राक्षसों के वध में वीर रस का सुंदर चित्रण होता है। कलाकारों ने इन रसों को चेहरों की मुद्राओं, शारीरिक भंगिमाओं और हाथ के इशारों के माध्यम से बखूबी व्यक्त किया है।

प्रतीकात्मकता: चित्रों में रंगों, पशु-पक्षियों, और प्राकृतिक तत्वों का प्रतीकात्मक उपयोग किया जाता है। नीला रंग कृष्ण के दैवीय स्वरूप का प्रतीक है, गायें सात्विकता और समृद्धि का, और कमल पवित्रता का प्रतीक है।

पृष्ठभूमि और स्थापत्य: मंदिरों, महलों, गोकुल के घरों और वनों को सूक्ष्मता से चित्रित किया जाता है। स्थापत्य तत्वों को अक्सर सपाट और योजनाबद्ध तरीके से दर्शाया जाता है, जो मेवाड़ शैली की विशिष्टता है। वनस्पति को भी प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया जाता है, जिसमें विभिन्न प्रकार के वृक्ष और लताएँ शामिल होती हैं।

वस्त्र और आभूषण: पात्रों के वस्त्र और आभूषण उस काल की वेशभूषा और अलंकरण शैली को दर्शाते हैं। कृष्ण का पीतांबर, मोर पंख, और विभिन्न आभूषण विशेष रूप से चित्रित किए जाते हैं, जो उनकी दिव्य पहचान को सुदृढ़ करते हैं।

दार्शनिक और सांस्कृतिक महत्त्व

हरिवंश पुराण के चित्र केवल धार्मिक ग्रंथ के चित्रण से कहीं बढ़कर हैं। वे:

भक्ति आंदोलन को बढ़ावा: इन चित्रों ने आम लोगों के बीच कृष्ण भक्ति को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दृश्यों के माध्यम से कृष्ण की लीलाओं को देखकर भक्त भावनात्मक रूप से उनसे जुड़ पाते थे।

नैतिक मूल्यों का संचार: कृष्ण की कहानियाँ धर्म, अधर्म, न्याय और अन्याय के बीच के अंतर को स्पष्ट करती हैं। ये चित्र दर्शकों को नैतिक मूल्यों और धार्मिक सिद्धांतों का पालन करने के लिए प्रेरित करते हैं।

सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण: इन चित्रों ने उस समय की सामाजिक, धार्मिक और कलात्मक परंपराओं को संरक्षित किया। वे हमें उस काल के जीवन-शैली, वस्त्र-भूषा और धार्मिक विश्वासों की एक झलक प्रदान करते हैं।

कला और धर्म का संगम: हरिवंश पुराण के चित्रों ने कला को केवल सौंदर्यपरक अभिव्यक्ति तक सीमित न रखकर उसे आध्यात्मिक उत्थान और धार्मिक शिक्षा का माध्यम बनाया। यह भारतीय कला परंपरा की एक अनूठी विशेषता है।

विषय वस्तु आधारित चित्रण

भारतीय लघुचित्र शैली में विषय वस्तु का चुनाव चित्रकार के कलात्मक दृष्टिकोण, तत्कालीन समाज की रुचियों और धार्मिक-सांस्कृतिक परिवेश का सीधा प्रतिबिंब होता है। किसी भी कला शैली को समझने के लिए उसकी विषय वस्तु का गहन विश्लेषण अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यह न केवल चित्र के कथानक को निर्धारित करती है बल्कि चित्रकार के उद्देश्य और उसके द्वारा संप्रेषित किए जा रहे संदेश को भी स्पष्ट करती है। मेवाड़ शैली जैसी राजस्थानी चित्रकला शैलियों में विषय वस्तु का चुनाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा है, जहाँ कला का उद्देश्य केवल सौंदर्यबोध नहीं, बल्कि भक्ति, नैतिकता और सामाजिक मूल्यों का प्रसार भी था।

विषय वस्तु के प्रकार और उनका महत्व

भारतीय लघुचित्र शैली में, विशेषकर मेवाड़ शैली में, विषय वस्तु को कई व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

धार्मिक और पौराणिक कथाएँ

यह भारतीय लघुचित्रों की सबसे प्रमुख और व्यापक श्रेणी है।

श्रीमद्भागवत पुराण: भगवान कृष्ण की लीलाएँ, जैसे माखन चोरी, गोवर्धन धारण, रास लीला, और कंस वध, अत्यंत लोकप्रिय विषय थे। ये चित्र कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते थे, जिनमें उनका बचपन, युवावस्था और दैवीय हस्तक्षेप शामिल है।

रामायण: भगवान राम के जीवन की घटनाएँ, जैसे सीता स्वयंवर, वनवास, लंका दहन, और राम-रावण युद्ध, भी बड़े पैमाने पर चित्रित की गईं। ये चित्र धर्म और अधर्म के संघर्ष, त्याग और कर्तव्यनिष्ठा के मूल्यों को दर्शाते हैं।

महाभारत: विशेषकर भगवद्गीता के अंश और कुरुक्षेत्र युद्ध के दृश्य।

हरिवंश पुराण: जैसा कि हमने पहले बिंदु में चर्चा की, यह भगवान कृष्ण के वंश और लीलाओं पर केंद्रित है, जिसमें उनके जन्म से पहले के वृत्तांत भी शामिल हैं।

देवी-देवता: शिव, विष्णु, ब्रह्मा, दुर्गा, लक्ष्मी जैसे विभिन्न देवी-देवताओं के विभिन्न रूप और उनसे संबंधित कथाएँ।

भक्ति संतों की लीलाएँ: चैतन्य महाप्रभु, मीराबाई, सूरदास जैसे संतों के जीवन और उनके भक्तिमय क्षणों का चित्रण।

महत्व: इन विषयों का चित्रण धर्म के प्रचार, भक्ति भावना को जागृत करने और आम जनता को पौराणिक कथाओं से परिचित कराने के उद्देश्य से किया जाता था। ये चित्र धार्मिक शिक्षा और आध्यात्मिक प्रेरणा के दृश्य माध्यम थे।

रागमाला चित्रण

यह भारतीय चित्रकला की एक अनूठी श्रेणी है, जहाँ रागों और रागिनियों को मानवीय रूप और उनके अनुरूप दृश्यों के माध्यम से चित्रित किया जाता है। प्रत्येक राग या रागिनी एक विशेष मनोदशा (रस), समय और मौसम से जुड़ी होती है।

उदाहरण: राग भैरव को अक्सर शिव के साथ, या एक योद्धा के रूप में चित्रित किया जाता है; रागिनी तोड़ी को एक वीणा बजाती स्त्री के रूप में, जिसके पास हिरण होते हैं। महत्व: ये चित्र संगीत और कला के बीच के गहरे संबंध को दर्शाते हैं। वे संगीत के अमूर्त अनुभव को दृश्य रूप में ढालकर दर्शकों को एक बहु-संवेदी अनुभव प्रदान करते हैं।

नायक-नायिका भेद (शृंगार रस)

यह विषय भारतीय काव्यशास्त्र से लिया गया है और इसमें प्रेम और वियोग की विभिन्न मानवीय भावनाओं को चित्रित किया जाता है।

उदाहरण: राधा और कृष्ण को आदर्श नायक-नायिका के रूप में दर्शाया जाता है, जो प्रेम की विभिन्न अवस्थाओं (जैसे अभिसारिका, विप्रलब्धा, खंडिता) को प्रस्तुत करते हैं। महत्व: ये चित्र मानवीय भावनाओं की सूक्ष्मता, विशेषकर प्रेम और सौंदर्य के सार्वभौमिक विषयों को दर्शाते हैं। वे शृंगार रस की विभिन्न अभिव्यक्तियों को कलात्मक रूप से प्रस्तुत करते हैं।

दरबार और राजसी जीवन

इन चित्रों में राजाओं, रानियों, दरबारियों और उनके दैनिक जीवन, शिकार दृश्यों, उत्सवों, युद्धों और राजनीतिक आयोजनों का चित्रण होता है।

उदाहरण: राजाओं के चित्र, शिकार के दृश्य, दरबार में आयोजित संगीत या नृत्य के कार्यक्रम। महत्व: ये चित्र तत्कालीन समाज, संस्कृति, वेशभूषा, स्थापत्य कला और शाही जीवन शैली का ऐतिहासिक दस्तावेज़ हैं। वे शासकों के संरक्षण और उनकी शक्ति का भी प्रदर्शन करते हैं।

सामाजिक जीवन और लोककथाएँ

कुछ चित्र आम लोगों के जीवन, ग्रामीण दृश्यों, त्योहारों और स्थानीय लोककथाओं पर आधारित होते हैं। महत्व: ये चित्र सामान्य जनजीवन, रीति-रिवाजों और लोक परंपराओं को समझने में मदद करते हैं, जो उस समय के समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे।

विषय वस्तु का कलात्मक निरूपण

विषय वस्तु का चुनाव सीधे तौर पर चित्र के कलात्मक निरूपण को प्रभावित करता है:

रंगों का प्रयोग: धार्मिक विषयों में अक्सर दिव्य आभा दर्शाने के लिए चटकीले और प्रतीकात्मक रंगों (जैसे कृष्ण के लिए नीला) का प्रयोग होता है, जबकि शृंगारिक विषयों में कोमल और सूक्ष्म रंगों का उपयोग किया जा सकता है।

संयोजन: युद्ध दृश्यों में गतिशीलता और नाटकीयता होती है, जबकि धार्मिक अनुष्ठानों में शांति और व्यवस्था का भाव होता है।

भाव: प्रत्येक विषय अपनी विशिष्ट भाव भंगिमाओं और चेहरों की अभिव्यक्तियों की मांग करता है।

प्रतीकात्मकता: कुछ विषय वस्तुएँ स्वयं ही गहरी प्रतीकात्मक होती हैं (जैसे रागमाला), जबकि अन्य में कलाकार प्रतीकों का उपयोग करते हैं (जैसे कमल कीचड़ में भी पवित्रता का प्रतीक)।

कला में रेखाए

कला में रेखाएँ किसी भी चित्र का मूलभूत आधार होती हैं। वे केवल किसी वस्तु की सीमाएँ निर्धारित नहीं करतीं, बल्कि वे भाव, गति, गहराई और रूप का संचार भी करती हैं। भारतीय लघुचित्र शैली, विशेषकर मेवाड़ शैली में, रेखाओं का प्रयोग अत्यंत परिष्कृत और अभिव्यंजक रहा है। यहाँ रेखाएँ केवल चित्र को परिभाषित करने का एक साधन नहीं हैं, बल्कि वे स्वयं में एक कलात्मक भाषा हैं, जो चित्रकार के कौशल और उसके द्वारा व्यक्त किए जाने वाले संदेश का सार प्रस्तुत करती हैं।

रेखाओं के प्रकार और उनके कार्य

कला में रेखाओं को उनके रूप और कार्य के आधार पर कई प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

बाह्य रेखाएँ: ये किसी आकृति या वस्तु की बाहरी सीमा को परिभाषित करती हैं। भारतीय लघुचित्रों में, ये रेखाएँ अक्सर मोटी, स्पष्ट और सशक्त होती हैं, जो रूपाकारों को एक ठोस और निश्चित रूप देती हैं।

आंतरिक रेखाएँ: ये किसी आकृति के भीतर विवरण, बनावट या छाया को दर्शाती हैं। वस्त्रों की तहें, आभूषणों की बारीकियाँ, या शरीर के अंगों की मांसलता को आंतरिक रेखाओं द्वारा कुशलता से व्यक्त किया जाता है।

गत्यात्मक रेखाएँ: ये रेखाएँ चित्र में गति, ऊर्जा और प्रवाह का आभास कराती हैं। नृत्य करते हुए आकृतियों, उड़ते हुए पक्षियों, या युद्ध दृश्यों में गति को व्यक्त करने के लिए इनका उपयोग होता है।

प्रतीकात्मक रेखाएँ: कुछ रेखाएँ विशेष अर्थ या भावनाओं का प्रतीक हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, सीधी, खड़ी रेखाएँ दृढ़ता और स्थिरता का प्रतीक हो सकती हैं, जबकि घुमावदार रेखाएँ कोमलता और प्रवाह का।

मेवाड़ शैली में रेखाओं का विशिष्ट प्रयोग

मेवाड़ शैली में रेखाओं का प्रयोग कुछ विशिष्ट विशेषताओं को दर्शाता है, जो इसे अन्य शैलियों से अलग करती हैं:

स्पष्टता और दृढ़ता: मेवाड़ शैली के चित्रों में रेखाएँ अत्यंत स्पष्ट, मोटी और मजबूत होती हैं। ये रेखाएँ चेहरों, वस्त्रों और अंगों की रूपरेखा को गाढ़ी काली या लाल रंग से खींचकर उन्हें एक सशक्त पहचान देती हैं। इससे आकृतियों में एक निश्चितता और ठोसता का भाव आता है।

लयात्मकता और प्रवाह: हालाँकि रूपाकारों में अधिक भौगोलिक गहराई नहीं होती, फिर भी रेखाओं में एक अद्भुत लयात्मकता व समान्तर क्रमबद्धता होती है। यह लयात्मकता विशेष रूप से वस्त्रों के चित्रण में, जैसे घाघरा-ओढ़नी की परतों में, और शरीर की कोमल भंगिमाओं में दिखाई देती है। यह चित्रों को एक संगीतमय और सहज प्रवाह प्रदान करती है।

भावों की अभिव्यक्ति: रेखाएँ केवल आकार ही नहीं बनातीं, बल्कि वे पात्रों के भावों और मनोदशा को भी व्यक्त करती हैं। आँखों की बड़ी और उभरी हुई रूपरेखा, होठों की कोमलता, और चेहरे के आड़े कोण को रेखाओं

के माध्यम से ही प्रभावशाली ढंग से दर्शाया जाता है। क्रोध, प्रेम, शांति, या आश्चर्य जैसे भावों को रेखाओं के सूक्ष्म हेरफेर से व्यक्त किया जाता है।

विवरण और बारीकी: वस्त्रों की जटिलता, आभूषणों का विवरण और पौधों की बारीकियाँ रेखाओं द्वारा ही दर्शायी जाती हैं। उदाहरण के लिए, एक पगड़ी के पेच, एक साड़ी की किनारी, या एक फूल की पंखुड़ियाँ—सभी को महीन और गाढ़ी रेखाओं के माध्यम से उभारा जाता है, जो चित्र में समृद्धता जोड़ती हैं।

सीमांकन और अलगाव: रेखाएँ चित्र के विभिन्न तत्वों को एक-दूसरे से अलग करने और उन्हें परिभाषित करने का काम करती हैं। यह विशेष रूप से तब महत्वपूर्ण होता है जब चित्र में कई आकृतियाँ या दृश्य एक साथ चित्रित किए गए हों, जैसे कि एक दरबारी दृश्य या एक पौराणिक कथा का बहु-स्तरीय चित्रण।

रेखाओं का सौंदर्यबोध और प्रतीकात्मकता

मेवाड़ शैली में रेखाएँ केवल तकनीकी साधन नहीं हैं, बल्कि वे स्वयं में सौंदर्य का स्रोत हैं:

सादगी में जटिलता: रेखाओं की सादगी के बावजूद, वे जटिल कथाओं और भावनाओं को व्यक्त करने में सक्षम होती हैं।

प्रतीकात्मकता: कुछ संदर्भों में, रेखाओं का प्रतीकात्मक महत्व भी होता है। उदाहरण के लिए, लहरदार रेखाएँ पानी या बादलों को दर्शाती हैं, जबकि सीधी रेखाएँ कठोरता या स्थिरता का संकेत दे सकती हैं।

आकर्षण और ध्यान केंद्रित करना: सशक्त और प्रवाहपूर्ण रेखाएँ दर्शकों का ध्यान चित्र के महत्वपूर्ण हिस्सों पर केंद्रित करती हैं, जिससे उन्हें कथा या भाव को समझने में आसानी होती है।

कला में रूपविन्यास

कला में रूपविन्यास से तात्पर्य चित्र के भीतर विभिन्न आकृतियों, वस्तुओं और तत्वों की व्यवस्था और उनके आपसी संबंधों से है। यह न केवल व्यक्तिगत तत्वों की पहचान को निर्धारित करता है, बल्कि यह भी तय करता है कि वे एक साथ मिलकर एक सामंजस्यपूर्ण और अर्थपूर्ण दृश्य का निर्माण कैसे करते हैं। भारतीय लघुचित्र शैली, विशेषकर मेवाड़ शैली में, रूपविन्यास एक अत्यंत नियोजित और प्रतीकात्मक प्रक्रिया है, जहाँ मानव, पशु और प्राकृतिक तत्वों को एक विशिष्ट शैलीगत भाषा में चित्रित किया जाता है ताकि कहानी, भाव और दार्शनिक संदेश को प्रभावी ढंग से संप्रेषित किया जा सके।

मानव आकृतियाँ

मेवाड़ शैली में मानव आकृतियों का चित्रण अत्यंत विशिष्ट और पहचान योग्य है:

शारीरिक संरचना: मानव आकृतियाँ प्रायः लंबी, पतली और कुछ हद तक स्थिर चित्रित की जाती हैं। उनमें अत्यधिक शारीरिक यथार्थवाद या त्रि-आयामी गहराई का अभाव होता है, लेकिन एक लयात्मक और सपाट शैली अपनाई जाती है।

चेहरा और आँखें: यह मेवाड़ शैली की सबसे प्रमुख विशेषताओं में से एक है। आँखें बड़ी, उभरी हुई और बादाम के आकार की होती हैं, जो अक्सर चेहरे के बाहर निकली हुई प्रतीत होती हैं। चेहरा प्रायः आड़े कोण में चित्रित किया जाता है, जिसमें नुकीली नाक और छोटे होंठ होते हैं। ये विशेषताएँ पात्रों को एक अद्वितीय पहचान और भाव देती हैं।

मुद्राएँ और भंगिमाएँ: मानवाकृतियों में सीमित शरीरगत गतियाँ होती हैं, लेकिन हाथों की मुद्राएँ (मुद्राएँ) और शरीर के झुकाव (जैसे मुड़ी हुई कमर) संवाद और भावनाओं को व्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नृत्य या युद्ध दृश्यों में गति को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया जाता है।

वस्त्र और आभूषण: पात्रों को अक्सर राजस्थानी घाघरा-ओढ़नी, पगड़ी और पारंपरिक आभूषणों (जैसे नथ, बाजूबंद, हार) में चित्रित किया जाता है। वस्त्रों की तहें और आभूषणों का विवरण रेखाओं और सपाट रंगों के माध्यम से बड़ी बारीकी से दिखाया जाता है, जो उस काल की वेशभूषा और अलंकरण शैली को दर्शाता है।

पशु आकृतियाँ

पशुओं का चित्रण भी मेवाड़ शैली के रूपविन्यास का एक अभिन्न अंग है, और वे अक्सर कथा या प्रतीकात्मकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं:

शैलीगत चित्रण: घोड़े, हाथी, गाय, हिरण और अन्य पशुओं को भी सपाट शैली में चित्रित किया जाता है, जिसमें प्राकृतिक अनुपात पर बहुत अधिक जोर नहीं दिया जाता। हालांकि, उन्हें उनके शुद्ध रूप में पहचाना जा सकता है।

गति और ऊर्जा: युद्ध दृश्यों में घोड़ों और हाथियों को गतिशीलता और शक्ति के साथ दर्शाया जाता है, जबकि कृष्ण लीलाओं में गायें और बछड़े कोमल और शांत भाव में होते हैं।

प्रतीकात्मकता: पशु अक्सर प्रतीकात्मक अर्थ रखते हैं। गायें समृद्धि, पवित्रता और वात्सल्य का प्रतीक हैं; घोड़े शक्ति और गति का; और शेर वीरता का।

जीव-जन्तु और पशु-पक्षी

चित्रों में विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु और पशु-पक्षी भी शामिल होते हैं, जो दृश्य में जीवन और प्राकृतिक सौंदर्य जोड़ते हैं:

विविधता: मोर, तोते, हंस, हिरण और अन्य छोटे जानवर अक्सर चित्रों के किनारों पर या पृष्ठभूमि में दिखाई देते हैं।

शैलीगत विशेषता: वृक्ष, पक्षी, गुलदस्ते (फूलों के गुच्छे), और कभी-कभी "कुष्ठयुक्त बादल" (शैलीबद्ध बादल जो घुमावदार या लहरदार होते हैं) मेवाड़ शैली की विशिष्टताएँ हैं।

प्रतीकात्मकता: मोर सुंदरता और प्रेम का प्रतीक हो सकता है, जबकि हंस पवित्रता का।

वनस्पति और प्रकृति

मेवाड़ शैली में प्रकृति का चित्रण यथार्थवादी न होकर प्रतीकात्मक और शैलीबद्ध होता है:

सीमित तत्व: चित्र में वनस्पति, पहाड़ या आकाश को सांकेतिक रूप में दिखाया जाता है। पेड़ों को अक्सर सपाट, सजावटी पैटर्न के रूप में दर्शाया जाता है, जिनमें पत्तियों और फूलों का विवरण होता है।

रंग और रूप: पहाड़ अक्सर सपाट, टेढ़े-मेढ़े आकार में चित्रित होते हैं, और पानी को लहरदार रेखाओं या पैटर्न के रूप में दर्शाया जाता है। आकाश को कभी-कभी सपाट रंग के बैंड या शैलीबद्ध बादलों से दर्शाया जाता है।

वातावरण निर्माण: ये तत्व कहानी के लिए एक उपयुक्त वातावरण बनाते हैं और दृश्य को संतुलित करते हैं, भले ही वे अत्यधिक विस्तृत न हों।

अन्य तत्व और समग्र रूपविन्यास

स्थापत्य : मंदिरों, महलों, मंडपों और घरों को अक्सर योजनाबद्ध और सपाट तरीके से चित्रित किया जाता है। वे पृष्ठभूमि या कहानी के दृश्यों को विभाजित करने का काम करते हैं।

संरचना : चित्रों को अक्सर कई भागों या स्तरों में विभाजित किया जाता है, जिससे एक ही चित्रपट पर कई घटनाओं को क्रमिक रूप से दर्शाया जा सके (निरंतर कथात्मकता)। यह दाएँ और बाएँ भाग में दृश्यों का विभाजन, या अग्रभूमि और पृष्ठभूमि का उपयोग करके किया जाता है।

समान्तर क्रमबद्धता: आकृतियों और तत्वों को अक्सर एक समान्तर क्रमबद्धता में व्यवस्थित किया जाता है, जिससे चित्र में एक लय और समरूपता आती है।

कला में रंगों (वर्ण) की प्रतीकात्मकता व सौंदर्यबोध

कला में रंग (वर्ण) केवल दृश्य को भरने का माध्यम नहीं होते; वे भाव, प्रतीक, वातावरण और सौंदर्यबोध का शक्तिशाली साधन होते हैं। भारतीय लघुचित्र शैली में, विशेषकर मेवाड़ शैली में, रंगों का प्रयोग अत्यंत योजनाबद्ध और प्रतीकात्मक रहा है। यहाँ रंग केवल प्राकृतिक दुनिया का अनुकरण नहीं करते, बल्कि वे गहन आध्यात्मिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक अर्थों को संप्रेषित करते हैं। मेवाड़ के चित्रकार अपने विशिष्ट रंग विधान के माध्यम से एक अनूठा सौंदर्यबोध और एक सशक्त दृश्य भाषा विकसित करते थे।

मेवाड़ शैली में रंगों का विशिष्ट प्रयोग

मेवाड़ शैली अपने चटकीले और जीवंत रंगों के प्रयोग के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ रंगों की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

प्राकृतिक रंगों का प्रयोग: मेवाड़ शैली में मुख्यतः खनिज और वनस्पति स्रोतों से प्राप्त प्राकृतिक रंगों का प्रयोग होता था। ये रंग अपनी स्थायित्व और चमक के लिए जाने जाते थे।

सपाट रंग भराव: इस शैली की सबसे विशिष्ट पहचान रंगों का सपाट प्रयोग है। चित्र में कोई छायांकन या त्रि-आयामी प्रभाव नहीं होता। रंग सीधे और बिना किसी मिश्रण के लगाए जाते हैं, जिससे चित्र को एक समान और उज्ज्वल रूप मिलता है। हालांकि, इस सपाट भराव के माध्यम से भी वस्त्रों और पृष्ठभूमियों में गहराई का आभास कराया जाता है।

रंगों का संतुलन और सामंजस्य: मेवाड़ के चित्रकार रंगों का प्रयोग अत्यंत संतुलित तरीके से करते थे। विभिन्न रंगों का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण चित्र को आकर्षक और मनभावन बनाता है।

रंगों की प्रतीकात्मकता

मेवाड़ शैली में प्रत्येक रंग का अपना गहरा प्रतीकात्मक महत्व होता है, जो चित्र के अर्थ और भाव को बढ़ाता है:

लाल: यह सबसे प्रमुख और बहुप्रयुक्त रंगों में से एक है। लाल रंग प्रेम, जुनून, ऊर्जा, शक्ति, वीरता और शुभता का प्रतीक है। अक्सर पृष्ठभूमि में लाल रंग का प्रयोग प्रेम दृश्यों (जैसे राधा-कृष्ण लीलाओं) में भावनाओं की तीव्रता को दर्शाने के लिए किया जाता है। यह क्रोध और युद्ध के दृश्यों में शक्ति और आक्रामकता को भी व्यक्त कर सकता है।

पीला: पीला रंग पवित्रता, प्रकाश, ज्ञान, आनंद और समृद्धि का प्रतीक है। भगवान कृष्ण के पीतांबर (पीले वस्त्र) अक्सर इसी रंग में चित्रित होते हैं, जो उनकी दिव्य आभा और आध्यात्मिक महत्व को दर्शाता है। यह बसंत ऋतु और नए जीवन का भी प्रतीक है।

हरा: हरा रंग प्रकृति, उर्वरता, ताजगी, विकास और सामंजस्य का प्रतीक है। यह अक्सर वनस्पति, पेड़ों और ग्रामीण दृश्यों में प्रयोग होता है, जो पृथ्वी के साथ जुड़ाव और जीवन की निरंतरता को दर्शाता है।

नीला: नीला रंग आकाश, अनंतता, दिव्यता और आध्यात्मिकता का प्रतीक है। भगवान कृष्ण को अक्सर नीले रंग में चित्रित किया जाता है, जो उनके लौकिक और अलौकिक स्वरूप को दर्शाता है। यह कभी-कभी उदासी या रहस्य का भी प्रतीक हो सकता है।

सफेद: सफेद रंग शुद्धता, शांति, पवित्रता और सादगी का प्रतीक है। यह अक्सर वस्त्रों, बादलों या विशिष्ट पात्रों को दर्शाने के लिए प्रयोग होता है, जो उनकी निर्मलता और आध्यात्मिक गुणों को दर्शाता है।

काला: काला रंग अक्सर अंधेरे, रहस्य, मृत्यु या बुराई का प्रतीक होता है। हालांकि, यह शक्तिशाली रेखांकन के लिए भी प्रयोग होता है, जो आकृतियों को परिभाषित करता है। पृष्ठभूमि में इसका प्रयोग दृश्य के स्तर को विभाजित करने में भी देखा जाता है।

रंगों का सौंदर्यबोध

मेवाड़ शैली में रंगों का सौंदर्यबोध कई आयामों में प्रकट होता है:

भावनाओं का संचार: रंगों का कुशल उपयोग दर्शकों में विभिन्न भावनाओं को जागृत करता है। लाल और पीले जैसे चमकीले रंग उत्साह और खुशी पैदा करते हैं, जबकि नीले और हरे रंग शांति और स्थिरता का भाव देते हैं।

दृश्यों का विभाजन: रंगों का प्रयोग अक्सर चित्र के विभिन्न दृश्यों या खंडों को विभाजित करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, पृष्ठभूमि का लाल और काली दोहरी रंग-भाषा दृश्य के स्तर को दर्शाने के लिए सामान्य है।

दृष्टिगत आकर्षण: चटकीले रंगों का संयोजन चित्रों को अत्यधिक आकर्षक और यादगार बनाता है। यह दर्शकों का ध्यान खींचता है और उन्हें कहानी में गहराई से उतरने के लिए प्रेरित करता है।

शैलीगत पहचान: रंगों का विशिष्ट प्रयोग मेवाड़ शैली को एक अद्वितीय कलात्मक पहचान देता है। यह इसे अन्य राजस्थानी शैलियों से अलग करता है और इसकी मौलिकता को स्थापित करता है।

सामंजस्य और संतुलन: भले ही रंग सपाट हों, चित्रकार उन्हें इस तरह से संयोजित करते हैं कि एक समग्र संतुलन और सामंजस्य बना रहे। यह रंगों की चमक और उनकी प्रतीकात्मकता के बीच एक सुंदर संतुलन स्थापित करता है।

अंतराल विभाजन तथा सक्रिय एवं निष्क्रिय अन्तराल

कला में अंतराल से तात्पर्य चित्र के भीतर उपलब्ध खाली या भरी हुई जगह से है। यह केवल एक पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि यह चित्र के अन्य तत्वों (आकृतियों, वस्तुओं) के साथ मिलकर एक सामंजस्यपूर्ण संरचना का निर्माण करता है। अंतराल विभाजन इस बात को संदर्भित करता है कि कलाकार इस स्थान को कैसे व्यवस्थित करता है ताकि विभिन्न तत्वों को रखा जा सके और एक प्रभावी संयोजन बनाया जा सके। भारतीय

लघुचित्र शैली में, विशेषकर मेवाड़ शैली में, अंतराल का प्रयोग अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, जहाँ इसे सक्रिय और निष्क्रिय अंतराल में वर्गीकृत किया जा सकता है, जो चित्र में गहराई, गति और कथात्मकता को व्यक्त करने में सहायक होते हैं।

अंतराल विभाजन का महत्व

भारतीय लघुचित्रों में, विशेष रूप से मेवाड़ शैली में, स्थान का विभाजन कथा कहने और दृश्य को स्पष्ट करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है:

कथात्मकता का प्रवाह: अक्सर एक ही चित्रपट पर कई घटनाओं या दृश्यों को दर्शाया जाता है (निरंतर कथात्मकता)। अंतराल विभाजन इन दृश्यों को स्पष्ट रूप से अलग करता है, जिससे दर्शक एक घटना से दूसरी घटना तक सहजता से जा सकें।

दृश्यों का अलगाव: चित्र को अक्सर विभिन्न खंडों या स्तरों में बाँटा जाता है। यह विभाजन दृश्यों को एक-दूसरे से अलग करता है, जिससे भ्रम की स्थिति पैदा नहीं होती। उदाहरण के लिए, एक तरफ प्रेमालाप का प्रसंग और दूसरी तरफ गंधर्व सभा को अलग-अलग खंडों में चित्रित किया जाता है।

संतुलन और सामंजस्य: स्थान का उचित विभाजन चित्र में संतुलन और सामंजस्य स्थापित करता है। यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी हिस्सा बहुत अधिक भरा हुआ या बहुत अधिक खाली न लगे।

दार्शनिक और प्रतीकात्मक अर्थ: कई बार, खाली स्थान आध्यात्मिक या प्रतीकात्मक अर्थों को व्यक्त करता है, जैसे शून्यता या अनंतता।

सक्रिय अंतराल

सक्रिय अंतराल से तात्पर्य चित्र में उन क्षेत्रों से है जहाँ मुख्य आकृतियाँ, वस्तुएँ या विषय स्थित होते हैं। यह वह 'भरा हुआ' स्थान है जो दर्शक का ध्यान सबसे पहले आकर्षित करता है। यह वह क्षेत्र हैं जो वास्तविक विषय को घेरते हैं, जैसे मानव आकृतियाँ, पशु, पेड़, भवन या कोई भी अन्य ठोस वस्तु जिसे चित्रित किया गया है।

मेवाड़ शैली में: मेवाड़ के चित्रों में, सक्रिय अंतराल पर विशेष जोर दिया जाता है। आकृतियाँ अक्सर बड़ी और प्रमुख होती हैं, जो चित्र के अधिकांश स्थान को घेरती हैं। पात्रों की वेशभूषा, आभूषण और चेहरे के भावों के विवरण पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे वे सक्रिय अंतराल के केंद्र बिंदु बन जाते हैं। उदाहरण के लिए, उर्वशी और राजा, गंधर्व, या राजदरबार में बैठी स्त्रियाँ सक्रिय अंतराल का निर्माण करती हैं।

निष्क्रिय अंतराल

निष्क्रिय अंतराल से तात्पर्य चित्र में उन 'खाली' या अनुपयोगी दिखने वाले क्षेत्रों से है जो मुख्य आकृतियों (सक्रिय अंतराल) को घेरते हैं। हालाँकि इसे 'खाली' कहा जाता है, यह चित्र के समग्र संतुलन और संयोजन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह वह पृष्ठभूमि या आसपास का स्थान है जो मुख्य विषयों को परिभाषित करता है और उन्हें अलग करता है। यह वह क्षेत्र है जो 'भरने' के लिए नहीं, बल्कि सक्रिय अंतराल को 'साँस लेने' की जगह देने के लिए मौजूद होता है।

मेवाड़ शैली में: मेवाड़ शैली में निष्क्रिय अंतराल का प्रयोग भी विशिष्ट होता है:

पृष्ठभूमि का प्रतीकात्मक प्रयोग: पृष्ठभूमि को अक्सर सपाट रंगों (जैसे लाल, पीला, नीला) में रंगा जाता है, जिसमें कोई विस्तृत परिदृश्य नहीं होता। ये सपाट रंग निष्क्रिय अंतराल का निर्माण करते हैं, लेकिन वे प्रतीकात्मक अर्थ (जैसे प्रेम के लिए लाल) भी रखते हैं और सक्रिय आकृतियों को उभारते हैं।

रंग-भाषा में विभाजन: पृष्ठभूमि अक्सर लाल और काली दोहरी रंग-भाषा में विभाजित होती है। यह विभाजन स्वयं एक प्रकार का निष्क्रिय अंतराल है जो एक ही चित्र में विभिन्न दृश्यों या कालखंडों को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, एक ही चित्र में जमीन पर हरी लहरदार रेखाएँ भूमि की प्रतीकात्मक प्रस्तुति करती हैं, जो निष्क्रिय अंतराल के माध्यम से दृश्य को अलग करती हैं।

गहराई का आभास: निष्क्रिय अंतराल का कुशल उपयोग, विशेष रूप से विभिन्न रंगीन पट्टियों या ज्यामितीय पैटर्न के माध्यम से, चित्र में गहराई का आभास कराता है, भले ही उसमें कोई त्रि-आयामी परिप्रेक्ष्य न हो।

अंतराल विभाजन के विशिष्ट उदाहरण

मेवाड़ शैली में अंतराल विभाजन के कुछ विशिष्ट तरीके इस प्रकार हैं:

क्षैतिज विभाजन: चित्र को क्षैतिज पट्टियों या बैंडों में विभाजित करना, जहाँ प्रत्येक पट्टी एक अलग दृश्य या कहानी के चरण को दर्शाती है।

ऊर्ध्वाधर विभाजन: कभी-कभी, ऊर्ध्वाधर रेखाएँ या स्थापत्य तत्व (जैसे दीवारें) चित्र को ऊर्ध्वाधर खंडों में विभाजित करते हैं।

दाएँ-बाएँ विभाजन: जैसा कि आपके उदाहरण चित्र में वर्णित है, दृश्य को अक्सर दाएँ और बाएँ भागों में बाँटा जाता है–एक तरफ प्रेमालाप का प्रसंग (उर्वशी और राजा), दूसरी तरफ गंधर्व सभा और स्त्रियों की चकित दृष्टि। यह विभाजन दो समानांतर घटनाओं या प्रतिक्रियाओं को एक साथ दर्शाता है।

स्थापत्य का प्रयोग: भवन, दीवारें या मंडप अक्सर दृश्यों को अलग करने और अंतराल को विभाजित करने के लिए उपयोग किए जाते हैं, जिससे चित्र को एक संरचनात्मक ढाँचा मिलता है।

उपसंहार

भारतीय लघुचित्र शैली में मेवाड़ स्कूल का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी है। हमने जिन विभिन्न बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की है - हरिवंश पुराण कथाओं का निरूपण, विषय वस्तु की विविधता, रेखाओं की स्पष्टता, रूपविन्यास का विशिष्टता, रंगों की प्रतीकात्मकता, और अंतराल का कुशल विभाजन - ये सभी मिलकर मेवाड़ शैली को एक अद्वितीय पहचान प्रदान करते हैं।

मेवाड़ शैली की चित्रकला केवल सौंदर्यशास्त्र का प्रदर्शन नहीं है, बल्कि यह अपने समय की धार्मिक आस्थाओं, सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक जीवन का एक जीवंत दस्तावेज़ भी है। इन चित्रों में भगवान कृष्ण और राम की लीलाएँ, राग-रागिनियों के अमूर्त भाव, और राजसी जीवन के दृश्य जिस श्रद्धा और कलात्मकता के साथ उकेरे गए हैं, वह दर्शाते हैं कि कला केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उत्थान और नैतिक शिक्षा का भी माध्यम थी। रेखाओं की दृढ़ता और प्रवाह, रंगों की चटकीली सपाटता, और रूपविन्यास की मौलिकता मेवाड़ के कलाकारों की अद्भुत रचनात्मक शक्ति का प्रमाण है। उन्होंने सीमित संसाधनों और तकनीकों के बावजूद ऐसी कृतियों का सृजन किया जो आज भी दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देती हैं।

मेवाड़ शैली हमें यह समझने में मदद करती है कि कैसे कला, भक्ति और संस्कृति एक-दूसरे से गुंथे हुए होते हैं। इन चित्रों ने न केवल दृश्य सौंदर्य प्रदान किया है, बल्कि उन्होंने आम लोगों के बीच पौराणिक कथाओं और

नैतिक मूल्यों को प्रसारित करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मेवाड़ की चित्रकलाएँ आज भी हमें अपने समृद्ध अतीत और कालातीत कलात्मक विरासत से जोड़ती हैं।

संदर्भ

1. महाभारत
2. हरिवंशपुराण
3. श्रीमहर्षि वेदव्यास प्रणित, हरिवंश पुराण, गोरखपुर, 2013, गीताप्रेस
4. पुराण विमर्श
5. भगवत गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर, 1982.
6. भविष्य पुराण, वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, 1912
7. उपाध्याय बल्देव, पुराण विमर्श, तृतीय संस्करण वाराणसी, 1987